SHODH SAMAGAM

ISSN : 2581-6918 (Online), 2582-1792 (PRINT)

कोविड–19 का वैश्विक व्यापार एवं मुद्रा पर प्रभाव

आशीष दूबे, (Ph.D.), वाणिज्य विभाग
विवेकानंद महाविद्यालय, रायपुर, छत्तीसगढ़, भारत

ORIGINAL ARTICLE

Corresponding Author
आशीष दूबे, (Ph.D.), वाणिज्य विभाग
विवेकानंद महाविद्यालय, रायपुर,
छत्तीसगढ़, भारत

shodhsamagam1@gmail.com

Received on : 19/12/2020
Revised on : -----
Accepted on : 26/12/2020
Plagiarism : 01% on 19/12/2020

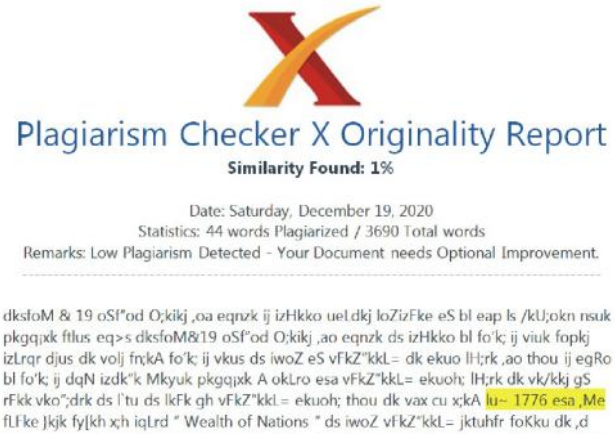
Plagiarism Checker X Originality Report
Similarity Found: 1%

Date: Saturday, December 19, 2020
Statistics: 44 words Plagiarized / 3690 Total words
Remarks: Low Plagiarism Detected - Your Document needs Optional Improvement.

dksfoM & 19 oSf"od O;kikj ,oa eqnzk ij izHkko uel.dkj loZizFke eS bl eap ls /kU;okn nsuk pkgq¡xk ftlus eq>s dksfoM&19 oSf"od O;kikj ,ao eqnzk ds izHkko bl fo'k; ij viuk fopkj izLrqr djus dk volj fn;kA fo'k; ij vkus ds iwoZ eS vFkZ"kkL= dk ekuo lH;rk ,ao thou ij egRo bl fo'k; ij dqN izdk"k Mkyuk pkgq¡xk A okLro esa vFkZ"kkL= ekuoh; lH;rk dk vk/kkj gS rFkk vko";drk ds l'tu ds lkFk gh vFkZ"kkL= ekuoh; thou dk vax cu x;kA lu~ 1776 esa ,Me fLFk ke Jkjk fy[kh x;h iqLrd " Wealth of Nations " ds iwoZ vFkZ"kkL= jktuhfr foKku dk ,d

शोध सार

अर्थशास्त्र मानवीय सभ्यता का आधार है, तथा आवश्यकता के सृजन के साथ ही अर्थशास्त्र मानवीय जीवन का अंग बन गया।

सन् 1776 में एडम स्थिम द्वारा लिखी गयी पुस्तक "Wealth of Nations" के पूर्व अर्थशास्त्र राजनीति विज्ञान का एक भाग माना जाता था, जिसे इसके पितामह एडम स्थिम के द्वारा धन का विज्ञान के रूप में परिभाषित किया गया। ईसा पूर्व तीसरी शताब्दी में महान भारतीय विद्वान चाणक्य (विष्णु गुप्ता) द्वारा भी अर्थशास्त्र नाम से एक ग्रंथ थी रचना भी गयी थी। वस्तुतः यह ग्रंथ राजनीति विज्ञान का ग्रंथ माना जाता है, जिसमें उस समय की राजनीतिक स्थितियों एवं गतिविधियों की व्याख्या भी गयी थी। इस ग्रंथ को राजनीति के नियमों का ग्रंथ भी माना जा सकता है। जिसमें राजा, प्रजा एवं राज्य के विभिन्न परिस्थितियों के कर्तव्यों एवं दायित्वों की विस्तृत व्याख्या की गयी थी। इस ग्रंथ में धन या मुद्रा के महत्व को स्पष्ट करते हुए चाणक्य ने लिखा था कि मुद्रा वह धुरी है, जिसके इर्द–गिर्द सम्पूर्ण भारतीय गतिविधियाँ संचालित होती है, इस प्रकार चाणक्य के द्वारा धन का मानवीय जीवन में महत्व स्पष्ट कर दिया गया था। एडम स्मिथ ने अर्थशास्त्र को धन का शास्त्र कह कर अर्थशास्त्र का क्षेत्र सीमित कर दिया। अर्थशास्त्र किसी भी अर्थव्यवस्था का आधार होता है। आर्थिक नीतियों का प्रभाव सामान्य मानवीय जीवन वैश्विक संबंधो तथा व्यापारिक संबंधो पर पडता है।

मुख्य शब्द

अर्थशास्त्र, अर्थव्यवस्था, राजनीति, युद्ध।

कोविड–19 के अवधि में वैश्विक व्यापार एवं प्राप्तियों के विश्लेषण के पूर्व उन महत्वपूर्ण तथ्यों को जानना भी आवश्यक है। जो इन स्थितियों के मूलभूत कारण है। मानवीय इतिहास के अध्ययन से यह तो स्पष्ट हो गया

है कि मानवीय सभ्यता का मूल आधार आवश्यकताओं का सृजन तथा उनकी पूर्ति हेतु संसाधनो की व्यावस्था करना है। औधेगिक क्रांति के पूर्व विशेष आर्थिक समस्याएँ नही थे, छोटे–छोटे राज्य होते थे, विदेशी व्यापारो का भी विवरण प्राप्त नही होता। यूरोप में औद्योगिक क्रांति के प्रारंभ होने के बाद उत्पादन की मात्रा में वृद्धि हुई है, जिसके लिए नए बाजारों की आवश्यकता हुई। उत्पादन के आकार बढ़ने के साथ ही अधिक पूंजी तथा कच्चे माल की भी आवश्यकता हुई। औद्योगिक क्रांति का प्रारंभ यूरोप में हुआ था, इसलिए अधिकांश यूरोपीय देश वैश्विक संसाधनों को एकत्रित करने के लिए उपनिवेशवाद की नीति को अपनाया तथा विभिन्न महाद्वीपों में अलग–अलग तरीके से वे अपना आधिपत्य जमाना प्रारंभ कर दिये। इसी क्रम में भारत में भी अनेक यूरोपीय राष्ट्रों का आगमन हुआ। यूरोपी शब्दों के उपनिवेशवादियों की नीतियों के प्रभाव से इनके मध्य में आपसी संबंधों में वृद्धि हुई तथा शक्ति संतुलन भी परिवर्तित हो गया। इस प्रकार वैश्विक स्तर पर एक में संघर्ष ने जन्म लिया जो आज भी विद्यमान है। 18 वीं शताब्दी के अंत तथा 19वीं शताब्दी के प्रारंभ में इन यूरोपीय राष्ट्रों में संघर्ष और अधिक बढ़ गया, जिसके कारण वे अलग–अलग समूह में बटने लगे, जिसके प्रभाव से शक्ति संतुलन तथा व्यापार का स्वरूप बदलने लगा। इन यूरोपीय राष्ट्रों का मुख्य उद्देश्य अपने उत्पादों के लिए बाजार का निर्माण करना तथा अधीनस्थ राष्ट्रों के संसाधनों का स्वहित में उपयोग करना था। भारत में भी सन् 1857 की राज्य क्रांति के पूर्व ईस्ट इंडिया कंपनी का शासन था। सन् 1757 में प्लासी की लड़ाई तथा सन् 1764 बक्सर की लड़ाई जीतने के बाद ईस्ट इंडिया कंपनी भारत में सबसे अधिक ताकतवर हो गई। ईस्ट इंडिया कंपनी के अतिरिक्त अनेक यूरोपीय राष्ट्र जैसे फ्रांस, पुर्तगाल, इंग्लैंड आदि भी भारत में थे, उन राष्ट्रों ने अलग–अलग स्थानों पर अपनी व्यापारिक बस्तियों का निर्माण किया था, जैसे फ्रांसिस बस्तियां पणजी में, पुर्तगाल की बस्ती गोवा में, इन सभी यूरोपीय राष्ट्रों का प्रमुख उद्देश्य केवल व्यापार करना नहीं अपितु हमारे संसाधनों पर नियंत्रण करना एवं उनका स्वहित में उपयोग करना था। यही कारण था कि इन राष्ट्रों में संघर्ष केवल भारत में ही नहीं था, अपितु यूरोप एवं अन्य उन महाद्वीपों में भी था, जहां इन रास्तों ने अपने उपनिवेशों की स्थापना किया था। भारत में ईस्ट इंडिया कंपनी की स्थिति सबसे सुदृढ़ थी तथा 1857 की प्रथम भारतीय स्वतंत्रता संग्राम क्रांति के बाद भारत में ईस्ट इंडिया कंपनी का शासन समाप्त हो गया और भारत ब्रिटिश साम्राज्य का उपनिवेश हो गया। यूरोपीय राष्ट्रों द्वारा पूरे विश्व में उपनिवेश स्थापित करने के कारण यह समृद्ध एवं शक्तिशाली हो गए, तथा 19वीं शताब्दी के प्रारंभ में अंतरराष्ट्रीय स्तर पर शक्ति संतुलन का स्वरूप परिवर्तित हो गया। समृद्धशाली राष्ट्रों की बढ़ती हुई महत्वकांक्षी व्यक्तिगत संघर्षों के स्वरूप को परिवर्तित कर दिया एवं यूरोपीय राष्ट्रों के शक्ति का स्वरुप संगठित रूप से विभिन्न समूहों में बट गया। यदि उक्त व्याख्या की समीक्षा किया जाता है तो स्पष्ट है कि, इस संपूर्ण अवधि में संघर्षों का केंद्र बिंदु, व्यापारिक केंद्र का विस्तार, वैश्विक संसाधनों पर नियंत्रण तथा आय अर्जन था। समय के साथ यह संघर्ष बढ़ता गया।

19वीं शताब्दी के प्रारंभ में शक्तिशाली एवं समृद्ध राष्ट्रों के संगठनात्मक स्वरूप ने वैश्विक संघर्षों के स्वरूप को परिवर्तित कर दिया। इस समय पूरे विश्व में प्रमुख यूरोपीय देशों का ही शासन था। इन देशों ने विभिन्न महाद्वीपों में जाकर अपना शासन स्थापित किया तथा प्राकृतिक संसाधनों को अपने अधिकार में ले लिया था। साम्राज्य बढ़ाने तथा संसाधनों पर नियंत्रण करने के लिए इन देशों के बीच संघर्ष बढ़ता गया जिसके कारण सन् 1914 से 1919 के मध्य प्रथम विश्व युद्ध हुआ। यह विश्व युद्ध यूरोप एशिया तथा अफ्रीका तीन महाद्वीपों में लड़ा गया, 28 जुलाई 1914 को प्रारंभ यह युद्ध 52 महीनों तक चला। इस युद्ध में विश्व के 37 देशों ने भाग लिया अनुमानतः विश्व की आधी जनसंख्या इस युद्ध के चपेट में आ गयी। लगभग 1 करोड़ से अधिक लोगों की जान इस युद्ध में गई तथा लाखों लोगों की जान महामारी, गरीबी तथा भुखमरी के कारण गयी। इस समय की पीढ़ी के लिए यह युद्ध, जीवन के प्रति सोच एवं दृष्टिकोण बदलने वाला था। इस युद्ध का प्रमुख कारण यूरोपीय राष्ट्रों का सामूहिक संघर्ष था। इस युद्ध में सम्मिलित समृद्धशाली यूरोपीय राष्ट्र दो समूहो में बट गए। एक समूह जिसमें ब्रिटेन, फ्रांस, अमेरिका, रूस, इटली आदि शामिल थे, वहीं दूसरे समूह या गठबंधन में ऑस्ट्रेलिया, हंगरी, जर्मनी, उस्मानिया, बुलगारिया आदि सम्मिलित है। इसे युद्ध के समाप्त होते–होते चार बड़े यूरोपीय साम्राज्य रूस, जर्मनी, ऑस्ट्रिया, हंगरी एवं उस्मानिया लगभग समाप्त हो गए। यूरोप की सीमाएँ पुनः निर्धारित हुए। अमेरिका ने महाशक्ति के रूप में अपना

स्थान बनाया। 18 जून 1919 को पेरिस शांति सम्मेलन के साथ युद्ध की समाप्ति की घोषणा की गई, तथा यह युद्ध समाप्त हुआ। अमेरिका, इंग्लैंड और फ्रांस ने शांति समझौते में प्रमुख भूमिका निभाई तथा जर्मनी पर वर्साय संधि थोपकर उस पर प्रतिबंध लगा दिया जो का प्रमुख कारण बना।

प्रथम विश्व युद्ध के प्रमुख चरणों में यूरोपीय राष्ट्रों की साम्राज्यवादी नीतियाँ शामिल थी। औद्योगिक क्रांति का लाभ उठाने के लिए सभी बड़े शक्तिशाली यूरोपीय देश ऐसे उपनिवेश चाहते थे, जहां से वे प्राकृतिक संसाधनों का दोहन कर सके, उत्पादन अधिक मात्रा में कर सके तथा अपने देशों में बनाए माल को बेचने के लिए उपनिवेश के रूप में बाजार विकसित कर सके। इस उद्देश्य की प्राप्ति के लिए हर देश ने अपनी सामरिक शक्तियाँ बढ़ाई तथा विभिन्न राष्ट्रों के साथ गुप्त राजनीतिक संधियाँ की, जिसके परिणाम स्वरूप दो शक्तिशाली राजनीतिक गठबंधन का निर्माण हुआ और प्रथम विश्व युद्ध हुआ। जिसका प्रमुख उद्देश्य इन समूहों का अपना अस्तित्व बनाए रखना था। यहाँ यह तो स्पष्ट हो गया कि, प्रथम विश्वयुद्ध का प्रमुख कारण यूरोपीय राष्ट्रों की व्यवसायिक आधिपत्य स्थापित करने की महत्वकांक्षी थी।

प्रथम विश्व युद्ध के बाद वैश्विक साम्राज्यवादी स्वरूपों में परिवर्तन हुआ तथा संपूर्ण वैश्विक सकता इस समय दो भागों में विभक्त हो गई। प्रथम विश्व युद्ध की विभीषिका को देखकर भविष्य में इस प्रकार की घटनाओं को रोकने के लिए सन् 1919 में राष्ट्र संघ की स्थापना की गई, परंतु यह द्वितीय विश्व युद्ध को रोकने में पूर्णतः विफल रहा तथा 20 वर्षों की छोटी सी अवधि में ही इसकी दूसरा विश्व युद्ध हुआ, जो प्रथम विश्व युद्ध से अधिक प्रलयकारी तथा भयानक था, इस युद्ध के कारण भी प्रथम विश्व युद्ध के कारणों से मिलते–जुलते थे।

प्रथम विश्व युद्ध की समाप्ति के बाद किया गया वर्साय संधि में ही द्वितीय विश्व युद्ध की नींव रख दिया था। जर्मनी ने दबाव में यह संधि पर हस्ताक्षर तो कर दिया था, किंतु उसने इसे स्वीकार नहीं किया। इस संधि के प्रावधानों के परिणाम स्वरूप जर्मनी को आर्थिक एवं सैन्य दृष्टि से पंगु बना दिया था। जर्मनी के बड़े भूभाग को विभिन्न यूरोपीय राष्ट्रों ने आपस में बांट लिया था, तथा जर्मनी की सामान्य जनता इसे कलंक मानती थी, इन यूरोपीय राष्ट्रों के प्रति उनके मन में घृणा की भावना थी। जनसामान्य की इसी घृणा के मनोभावन का फायदा हिटलर ने फायदा उठाया था, सत्ता हथिया लिया। सत्ता पर आते ही उसने वर्साय संधि को मानने से इंकार कर दिया और आक्रमण नीति अपनाकर द्वितीय विश्वयुद्ध की नींव रख दिया। हिटलर नाज़ीवादी विचारधारा के जनक थे, जिन्होंने जर्मनी को विश्व में श्रेष्ठ कौम के रूप में परिवर्तित किया तथा प्रेम को सर्वोपरि बताया। हिटलर को इटली के तानाशाह का साथ मिला जो नाज़ीवाद विचारधारा के जनक थे। दोनों ही विचारधारा वैश्विक समुदाय से अपने आप को पृथक तथा श्रेष्ठ में परिभाषित करते थे।

द्वितीय विश्व युद्ध का प्रमुख कारण समृद्ध एवं संपन्न राष्ट्रों की साम्राज्यवादी नीतियां भी थी। यह शक्तिशाली राष्ट्र अपनी संपत्ति अधिकार सत्ता तथा शक्ति में वृद्धि करना चाहते थे। सन् 1930 में इन रास्तों की इस मनोवृत्ति में और अधिक वृद्धि हुई। सन् 1929–30 की वैश्विक आर्थिक मंदी जिसे तीसा की मंदी के नाम से भी जाना जाता है ने भी द्वितीय विश्व युद्ध में अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। वैश्विक मंदी के प्रभाव से उद्योग ,धंधे कृषि उत्पादन आदि महत्वपूर्ण आर्थिक क्षेत्रों की स्थितियाँ खराब हो गयी। जिसके प्रभाव से बेरोजगारी तथा भुखमरी बढ़ने लगी। विभिन्न यूरोपीय राष्ट्रों ने आर्थिक स्थिति सुधारने के लिए बेरोजगारों को देश की सेना में नौकरियां उपलब्ध कराने लगे जिसके कारण इन राष्ट्रों की सैन्य शक्तियाँ बढ़ने लगी जो द्वितीय विश्व युद्ध का आधार बना। द्वितीय विश्व युद्ध के और भी अनेक कारण थे, किंतु साम्राज्य विस्तारवादी नीतियाँ सन् 1929–30 की व्यापक वैश्विक मंदी तथा जनसामान्य का व्यापक असंतोष ही प्रमुख कारण था। वास्तव में प्रथम विश्व युद्ध एवं द्वितीय विश्व युद्ध के बीच का समय अस्थाई एवं असंतुलित समय था, विश्व राजनीति के दृष्टिकोण से इस अवधि की इस स्थिति को नियंत्रित करने में संयुक्त राष्ट्र सफल नहीं रहा। सन् 1933 में हिटलर के हाथों में जर्मनी की सत्ता आते ही उसने वारसा संधि तोड़ दिया, जिसके कारण यूरोपीय देशों के बाजारों में अत्यधिक आर्थिक गिरावट आ गयी। इस प्रकार यूरोपीय देशों के मध्य आपसी प्रतिस्पर्धा प्रारंभ हो गयी। राजनीतिक अस्थिरता और प्रतिकूल आर्थिक स्थिति के कारण कुछ

देशों में तानाशाही की प्रवृत्ति बढ़ने लगी जिसमें जर्मनी, इटली, जापान तथा सोवियत संघ प्रमुख थे। इस समय विश्व के तत्कालीन प्रमुख देश दो गठबंधन समूह में विभाजित हो गये, कुछ देश उदासीन भी थे। उपनिवेशिका देशों का अपने शासकों के साथ रहना मजबूरी था। प्रथम गठबंधन में संयुक्त राष्ट्र अमेरिका, फ्रांस, ग्रेट ब्रिटेन एवं सोवियत संघ शामिल थे तथा दूसरे गठबंधन में जर्मनी, जापान तथा इटली प्रमुख देश थे।

द्वितीय विश्व युद्ध में प्रथम विश्व युद्ध की तुलना में जन धन की अधिक हानि हुई। एक अनुमान के अनुसार इस युद्ध में दोनों पक्षों के 5 करोड़ से अधिक लोग मारे गए, जिसमें सोवियत संघ के सबसे अधिक सैनिक थे। लाखों लोग बेघर–बार हो गए जिनकी पुनर्वास की बड़ी समस्या थी। इस युद्ध में अनेक मूल्यवान संपत्तियाँ नष्ट हो गई। अकेले इंग्लैंड की 2000 करोड रुपए से अधिक की संपत्तियाँ नष्ट हो गई थी। द्वितीय विश्व युद्ध में परमाणु बमों का भी उपयोग किया गया, जिसके कारण जापान के नागासाकी हिरोशिमा द्वीप समूह में अत्यधिक तबाही हुई। विश्व युद्ध के बाद सभी साम्राज्यवादी राष्ट्रों को अपने उपनिवेशो से हाथ धोना पड़ा। इस विश्व युद्ध के बाद उपनिवेशो में राष्ट्रीयता की भावना का विस्तार हुआ जिसके प्रभाव से अनेक एशियाई राष्ट्र यूरोपीय देशों की दासता से मुक्त हो गए। इस युद्ध में यूरोपीय राष्ट्रों के शक्ति एवं साधनों का इतना हास हुआ कि वे अपने उपनिवेशो में नियंत्रण बनाए रखने में सफल नहीं रहे, जिसके कारण अनेक देश स्वतंत्र हो गए जिसमें भारत भी शामिल है। द्वितीय विश्व युद्ध से पूर्व तक ग्रेट ब्रिटेन एक शक्तिशाली राष्ट्र था, जिसकी विश्व राजनीति में महत्वपूर्ण भूमिका थी, किंतु द्वितीय विश्व युद्ध के बाद ब्रिटेन की स्थिति दुर्बल हो गई।

द्वितीय विश्व युद्ध के बाद पूंजीवादी विचारधारा एवं साम्यवादी विचारधारा के समर्थक दो भागों में बट गए। पूंजीवादी देशों का नेतृत्व अमेरिका और साम्यवादी देशों का नेतृत्व सोवियत संघ द्वारा किया गया। पूंजीवादी राष्ट्रों एवं साम्यवादी राष्ट्रों में गठबंधन के परिणाम स्वरूप इन राष्ट्रों के मध्य शीत युद्ध का दौर प्रारंभ हो गया। शीत युद्ध के कारण राष्ट्रों द्वारा भयानक परमाणु हथियारों का जमावड़ा किया गया है, जिसका दुष्परिणाम आने वाले समय में या भविष्य में पूरे विश्व को भुगतना पड़ेगा। द्वितीय विश्व युद्ध के बाद पुनः एक ऐसी संस्था की आवश्यकता महसूस की गई जो वैश्विक स्तर पर विभिन्न शक्तिशाली राष्ट्र के मध्य सामंजस्य स्थापित कर विश्व में शांति स्थापित कर सके। संयुक्त राज्य अमेरिका के नेतृत्व में 24 अक्टूबर 1945 को संयुक्त राष्ट्र संघ की स्थापना की गई।

संयुक्त राष्ट्र संघ की स्थापना के साथ ही वैश्विक राजनीति में एक नया अध्याय प्रारंभ हुआ। द्वितीय विश्व युद्ध की समाप्ति के बाद अधिकांश उपनिवेश स्वतंत्र हो गए थे एवं इन उपनिवेशिक राष्ट्रों ने मिलकर गुटनिरपेक्ष राष्ट्रों का गठबंधन बनाया तथा अपने प्रथम अस्तित्व को स्थापित किया। संयुक्त राज्य अमेरिका पूंजीवादी दृष्टिकोण वाले राष्ट्रों का प्रतिनिधित्व करता था जिसमें अधिकांश शक्तिशाली यूरोपीय देश ब्रिटेन, फ्रांस, इटली, जर्मनी (पश्चिमी), जापान आदि अनेक राष्ट्र शामिल थे, तथा सोवियत संघ साम्यवादी राष्ट्रों का प्रतिनिधित्व करता था, जिसमें पूर्वी जर्मनी चीन, उत्तर कोरिया आदि अनेक राष्ट्र शामिल थे। भारत गुटनिरपेक्ष राष्ट्र के संघ में शामिल हुआ।

प्रथम विश्व युद्ध के समाप्ति के बाद गठित संयुक्त राष्ट्र की असफलता को देखते हुए नवगठित संयुक्त राष्ट्र संघ के कार्य क्षेत्रों का विस्तार किया गया, अब वैश्विक शांति के अतिरिक्त स्वास्थ्य, समाज कल्याण, शिक्षा, व्यापार के नियंत्रण, संतुलन एवं विस्तार के लिए संयुक्त राष्ट्र संघ की विभिन्न शाखाएं अलग–अलग स्थानों पर स्थापित किया गया। संयुक्त राष्ट्र संघ की स्थापना के पश्चात् सन् 1980 से पूर्व का समय शीत युद्ध के काल के रूप में जाना जाता है। सोवियत संघ के विघटन के पूर्व पूंजीवादी तथ्य साम्यवादी ताकतें अपना वर्चस्व स्थापित करने के लिए आपस में संघर्ष करते रहे।

सोवियत संघ के विघटन के बाद साम्यवादी ताकते कमजोर पड़ गई और पूंजीवादी अर्थव्यवस्था का प्रभाव बढ़ गया। अब अमेरिका की ताकत बढ़ गई और वह संपूर्ण विश्व के व्यापारिक गतिविधियों को नियंत्रित करने के लिए अनेक नियम बनाने लगा, जिनका पूरे विश्व में व्यापक विरोध हुआ। जिसमे डंकल प्रस्ताव प्रमुख था, जो बौद्धिक संपदा नियंत्रण संबंधित कानून था, जिसका वैश्विक स्तर पर विरोध हुआ। सोवियत संघ के विघटन के बाद मुक्त व्यापार नीति को वैश्विक स्तर पर स्वीकार किया गया। इस नीति ने पारंपरिक नियंत्रण अर्थव्यवस्था के इस स्थान

पर कम नियंत्रित मुक्त व्यापार उदारीकृत अर्थव्यवस्था को स्थापित किया। जिसे धीरे–धीरे पूरे विश्व में मान्यता मिली वर्ष 1991 में यह नीति भारत द्वारा भी स्वीकार कर ली गई। उदारीकृत अर्थव्यवस्था की आर्थिक नीति का संबंध वैश्विक आर्थिक संसाधनों पर नियंत्रण सही था। इस आर्थिक नीति द्वारा विदेशी पूंजी का अर्थव्यवस्था में विनियोजन को स्वीकार किया गया। उदारीकरण की आर्थिक नीति ने वैश्विक अर्थव्यवस्था को नई दिशा प्रदान किया। इस आर्थिक नीति के आगमन के प्रथम चरण में आर्थिक विकास की गति विदेशी पूंजी के विनियोजन को अनुमति मिलने से बढ़ गई। यह आर्थिक नीति मुख्यतः वैश्विक संसाधनों पर पूंजी पतियों के नियंत्रण से संबंध रखती है। द्वितीय विश्व युद्ध के बाद विभिन्न अर्थव्यवस्थाओं की आर्थिक नीतियों, बाजार, उत्पादन तथा वितरण में उचित संतुलन नहीं होने के कारण उनकी आर्थिक स्थिति खराब थी। उदारीकरण की नीति अपनाने विदेशी पूंजी के आगमन से इन अर्थव्यवस्थाओं के विकास में गति आई। नए बाजारों का विकास नवीन व्यवसायिक अवसरों के सृजन एवं आय में वृद्धि ने आर्थिक व्यवस्था के आर्थिक एवं सामाजिक क्षेत्रों के विकास को गति प्रदान किया तथा विकास की इस आवश्यकता ने विकासशील राष्ट्रों को भविष्य में विकास के सपने दिखलाएँ। धीरे–धीरे उदारीकृत नीतियों का नकारात्मक प्रभाव अर्थव्यवस्था पर पड़ने लगा। जिसका प्रमुख कारण उदारीकृत अर्थव्यवस्था के संसाधनों पर बढ़ता हुआ विदेशी निवेश था। संसाधनों पर बढ़ता हुआ विदेशी निवेश के प्रभाव से विदेशी पूंजीपतियों का उन पर नियंत्रण बढ़ता जा रहा था और वे स्वहित के लिए ही उन संसाधनों का उपयोग कर रहे थे। जिसके प्रभाव से विकासशील अर्थव्यवस्थाओं को अपने संसाधनों से कम लाभ मिलने लगा इन अर्थव्यवस्थाओं का आर्थिक विकास प्रभावित होने लगा। इसे गिद्ध पूंजीवाद (Vulture Capitalism) कहते है। इस सिद्धांत में पूंजीपति समृद्ध राष्ट्र एवं अविकसित एवं विकासशील राष्ट्रों के संसाधनों पर विनियोजन के माध्यम से अधिकार करते हैं तथा जिस प्रकार गिद्ध मरे हुए पशुओं को नोचता है ठीक वैसे ही वे अपने लाभ के लिए संसाधनों का निर्दयता से उपयोग करते हैं तथा जब वे इन संसाधनों से इच्छित लाभ प्राप्त करने में सफल नहीं रहते तो, अपनी निवेशित पूंजी निकाल उसे छोड़ देते हैं जिसका नकारात्मक प्रभाव विकासशील राष्ट्रों के विकास पर तथा संसाधनों पर पड़ता है।

उपरोक्त संपूर्ण विवरण से चाणक्य की यह बात सत्य हो गई कि संपूर्ण माननीय गतिविधियां मुद्रा के चारों ओर संचालित होती है। उदारीकरण की नीति के प्रभाव से वैश्विक मंदी धीरे–धीरे अपनी जड़ें पहले विकसित एवं समृद्ध अर्थव्यवस्थाओं पर फिर विकासशील अर्थव्यवस्थाओं पर जमाने लगी है। जिसे नियंत्रित करने के लिए विकसित एवं विकासशील राष्ट्रों द्वारा व्यक्तिगत एवं सामूहिक रूप से प्रयास किए जाते रहे है, किंतु इस वैश्विक मंदी को नियंत्रित करने के लिए स्थाई समाधान निकालने में सफल नहीं रहे है।

वर्तमान वैश्विक आर्थिक एवं राजनीतिक स्थितियों के विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि वर्तमान स्थिति भी प्रथम विश्व युद्ध एवं द्वितीय विश्व युद्ध के पूर्व के वैश्विक स्थिति से पृथक नहीं है। प्रथम एवं द्वितीय विश्व युद्ध के पूर्व विभिन्न अर्थव्यवस्थाओं के नियंत्रण संसाधनों पर उपनिवेशवाद के माध्यम से नियंत्रण किया जाता था। वर्तमान स्थिति में अविकसित अर्थव्यवस्थाओं के संसाधनों पर नियंत्रण शक्तिशाली एवं समृद्ध राष्ट्रों द्वारा विनिवेश के माध्यम से किया जा रहा है। सोवियत संघ के पतन के बाद संयुक्त राज्य अमेरिका द्वारा वैश्विक संप्रभुता स्थापित करने के लिए विनिवेश तथा शक्ति सुरक्षा की नीतियों का उपयोग करता रहा है, तथा व विश्व में अपने को संपूर्ण साधन संपन्न शक्तिशाली के रूप में स्थापित करने में सफल रहा है।

वर्तमान में अमेरिका के प्रतिस्पर्धी के रूप में एशिया की बड़ी शक्ति चीन सामने आया है और वह पूंजी विनियोजन विनिवेश की नीति के माध्यम से एशिया, यूरोप तथा अफ्रीका के कई देशों में अपना नियंत्रण स्थापित करने में सफल रहा है और अमेरिका को चुनौती दे रहा है। कोविड–19 महामारी फैलने के बाद से दोनों देशों के मध्य तनाव और बढ़ गया है, और दोनों राष्ट्रों के मध्य आरोप–प्रत्यारोप की गतिविधियां बढ़ गई है, जो धीरे–धीरे वैश्विक स्तर पर तनाव का रूप ले रही है। कोविड–19 के फैलाव के लिए अमेरिका चीन को दोषी ठहरा रहा है और उसने संयुक्त राष्ट्र संगठन के एक अंग WHO की विश्वसनीयता पर भी प्रश्न चिन्ह लगा दिया है। पुनः विश्व के राष्ट्र दो गठबंधन में बढ़ रहे हैं, और यह स्थिति पूरे विश्व के लिए घातक है। अतः कह सकते हैं कि पूरा पूरा विश्व तृतीय विश्व युद्ध के सामने खड़ा है।

भारत में कोविड–19 का प्रभाव इस वर्ष मार्च से दिखना प्रारंभ हुआ। प्रारंभ में स्थितियां विशेष चिंताजनक नहीं लगी और ऐसा लगा कि स्थिति नियंत्रित हो जाएगी, किंतु समय के साथ कोविड–19 की स्थिति भयावह हो गई है। कोविड–19 के कारण भारतीय अर्थव्यवस्था के प्रत्येक कार्य क्षेत्रों पर नकारात्मक प्रभाव दिखाई पड़ रहा है। लॉकडाउन के प्रारंभिक चरण में मजदूरों का पलायन बड़ी समस्या रही। कोविड–19 के कारण उत्पादन कार्यों में रोक लगाने से बड़ी संख्या में प्रवासी मजदूर अपने कार्य क्षेत्रों को छोड़कर अपने घरों में वापस आ गए, जिसका दो तरफा प्रभाव अर्थव्यवस्था पर पड़ रहा है। पुनः उत्पादन कार्य प्रारंभ किए जाने पर उद्योगों को आवश्यकता अनुसार मजदूर उपलब्ध नहीं हो पा रहे है, और वापस घर में आए हुए मजदूर बेरोजगार हो गए है। प्रवासी मजदूरों को रोजगार उपलब्ध कराने के लिए सरकार द्वारा विभिन्न योजनाओं का संचालन किया जा रहा है, किंतु वे आवश्यकता के अनुरूप नहीं है। कोविड–19 का नकारात्मक प्रभाव सेवा क्षेत्रों बाजार उत्पादन एवं अन्य सभी उत्पादक क्षेत्रों पर पड़ रहा है, जिसे नियंत्रित करने के लिए सरकार द्वारा अनेक कार्यक्रमों का संचालन किया जा रहा है। रिजर्व बैंक ऑफ इंडिया द्वारा भी ब्याज दरों में कटौती कर देशों के विभिन्न आर्थिक क्षेत्रों को राहत देने के लिए सकारात्मक कदम उठाया गया है।

यदि कोविड–19 के सकारात्मक प्रभाव को देखा जाए तो यहां पर महत्वपूर्ण है कि सरकार ने वैश्विक संघर्षों को देखते हुए आत्मनिर्भर भारत की परिकल्पना के लिए नियोजन करना प्रारंभ कर दिया है। जिसके कारण भविष्य में सुदृढ़ रोजगार का आधार देश में बनने की संभावना है। सरकार द्वारा स्वरोजगार एवं व्यक्तिगत कौशल को प्रोत्साहित करने के लिए अनेक योजनाओं का संचालन किया जा रहा है। आत्मनिर्भर भारत बनाने के लिए लघु एवं कुटीर उद्योगों को प्रोत्साहित किया जा रहा है, एवं इन क्षेत्रों के विकास के लिए योजनाएं बनाई जा रही है, जिसका लाभ भविष्य में भारतीय अर्थव्यवस्था को होगा। उम्मीद किया जा सकता है कि भविष्य में इन योजनाओं की सकारात्मक प्रभाव भारतीय अर्थव्यवस्था पर दिखाई देगा तथा आत्मनिर्भर भारत की परिकल्पना सफल रहेगी।

निष्कर्ष

उदारीकरण के दौर में विश्व के विभिन्न देशों में बढ़ती हुई प्रतिस्पर्धा और कोविड–19 के प्रभाव से और भी अधिक चुनौतीपूर्ण हो गई है। वर्तमान परिपेक्ष्य में संपूर्ण विश्व के देश दो भागों में बंट गए है, और इनकी व्यापारिक प्रतिस्पर्धा धीरे–धीरे सामरिक प्रतिस्पर्धा में परिवर्तित हो रही है, जो संपूर्ण मानवीय सभ्यता के लिए घातक है। कोविड–19 के प्रभाव से भारतीय अर्थव्यवस्था में आत्मनिर्भरता की परिकल्पना जन्म ले रही है, जो भारतीय अर्थव्यवस्था के भविष्य के लिए सुखद है। आत्मनिर्भर भारत बनाने के लिए स्थानीय स्तर पर छोटे–बड़े उद्योगों को प्रोत्साहित करने के लिए अनेक योजनाएं बनाई जा रही है। जिसका लाभ भविष्य में हमारी अर्थव्यवस्था को प्राप्त होगा। स्थानीय स्तर पर उच्च गुणवत्ता के उत्पादों का कम लागत में उत्पादन, भारतीय अर्थव्यवस्था को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर सुदृढ़ बाजार के निर्माण का अवसर प्रदान करेगा जो सुदृढ़ भारतीय अर्थव्यवस्था के लिए लाभदायक है।

संदर्भ सूची

1. https://www.scribd.com/document/435424993/DECO404-PUBLIC-FINANCE-HINDI-pdf
2. http://www.dmrelief.rajasthan.gov.in
3. https://ncert.nic.in
4. https://morth.nic.in
5. https://www.npcindia.gov.in

****